3, 71, 438
प्रसारण संख्या का विश्व कीर्तिमान रचने वाली भारत की एकमात्र बाल पत्रिका

सर्वाधिक प्रसारित हिन्दी बाल मासिक
देवपुत्र

कहानी

वृक्ष प्रेमी

●सुधा दाते

चार साल पहले मुकेश तमिलनाडू घूमने गया था। जिस होटल में वे रुके थे, उसके बाहर उगे एक फूल के नन्हे से पौधे ने उसका ध्यान खींचा। बहुत सुंदर लग रहा था वह नन्हा पौधा। मुकेश ने प्रबंधक से पूछ उस पौधे को सावधानी से उखाड़ा, और मिट्टी में जड़ लपेटकर सुरक्षित घर ले आया। आते ही उसने अपने कमरे की खिड़की के बाहर गड्ढा खोदकर लगा दिया। पानी डालकर वह खुश हो गया। उसे एक हंसता महकता दोस्त मिल जाएगा।

वह रोज शाला से आने पर उसे ध्यान से निहारता। उसमें कितनी नन्हीं डगालें उगी हैं। वह कितना उंचा हुआ है। क्या उसमें कलियों के गुच्छे आए हैं? ऐसी बहुत सी बातों का वह ध्यान रखता। बिना भूले एक छोटी बाल्टी पानी भी देता। यदि घास फूस उगी हो तो उसे धीरे से उखाड़ फेंकता। बीच-बीच में खुरपी भी करता। ऐसी सार सम्हाल और मुकेश का प्रेम पाकर वह पौधा जल्दी-जल्दी बढ़ने लगा। दो साल में ही वह चार पांच फिट का हो गया। एक सुबह मुकेश ने देखा कि उसमें एक दो कलियों के गुच्छे भी निकल आए हैं। उसे खूब खुशी हुई। माता पिता और मित्रों को फूल दिखाते वह नहीं अघाता था। उसके चेहरे की खुशी देख माता पिता भी खूब खुश हुए।

ऐसे ही दो और साल गुजर गए। अब तो वह चार साल का पेड़ बन गया था। आठ – नौ फीट उँचा और घेरे दार वृक्ष। खूब सारे पत्ते और हर छोटी डाल पर से नीचे की ओर लटकते फूलों के लाल रंग के गुच्छे। फूल भी खिले अनखिले। उनका आकार ही कलियों जैसा था। पंखुड़ियां थोड़ी सी खुली हुई। एक इंच की नली के छोर पर। उसमे खुशबू इतनी ज्यादा नहीं थी। एक दम पास जाओ तो जरा सी महक थी। परंतु उसका आकार विस्तार और तीन-चार इंच लंबे पत्ते उसका सौंदर्य था। बारहों मास वह पेड़ हरा भरा ही दिखता। जनवरी आते ही कितने ही शकरखोरे उस पर मंडराने लगते।

वे शकरखोरे याने हमींग बर्ड दिन भर उसकी एक डाल से दूजे पर कूदते फांदते रहते। और हवा में ही अपने नन्हें नन्हें पंखों को हिलाते हुए उन अधखुले फूलों से अपनी लंबी पतली बांकदार चोंच से शहद चूसते। फूल का शहद खत्म होते ही दूसरे फूल पर। यह नृत्यनाटिका तो देखते ही बनती। काले चमकदार मोर

पंखी रंग की आभा लिए वे पक्षी जब अपने पंखों को उड़ाते हुए फूलों से रस चूसते तो ईश्वर के खेल का अचरज लगता। उनकी तानें भी बड़ी सुरीली और उंची होती। मानो कोयल की पंचम से होड़ ले रही हो। कितना सुन्दर साथ था उस सदा हरे वृक्ष और नाचती गाती चिड़ियाओं का । मुकेश जब-जब पढ़ाई करके थक जाता तो कुर्सी पर आँख बंद किए बैठा रहता और उनकी लंबी तानें सुनता।

यह वृक्ष अब मुकेश ही नहीं पूरी कॉलोनी का दोस्त बन गया था। मुकेश का कोई भी दोस्त घर आता तो वह पहले उस वृक्ष को निहारता। उसके फूलों के गुच्छे, उन पर अपनी पतली लंबी जरा सी टेढ़ी चोंच फूलों में डाल हवा ही हवा में उड़ते हुए पक्षियों का मधु चूसना बड़ा मनोरंजन करता उन दोस्तों का। और फिर उन पक्षियों के साथ बच्चे खूब समय गुजारकर खुश हो कर घर जाते। दोपहर में कॉलोनी की काम करने वाली बाईयां उसकी छांव में बैठकर थोड़ी देर सुस्ता लेते और आसपास के कार चालक अपनी कार उसी की छांव में खड़ी करते। उसका पेड़ अब धरती का असली बेटा बन गया था। अपना परोपकार का काम वह बखूबी निभाता था।

जनवरी में हमींग बर्ड का नजारा वह अपने जिन चचेरे भाई बहनों को बताना था वे ही राखी पर उसके यहां आए थे। वे लोग पेड़ को देखने गए तो एक अलग ही नजारा वहां उपस्थित था। पीले रंग की अनगिनत तितलियां उस पेड़ पर मंडरा रही थीं। बीच-बीच में फूलों में अपनी एकदम लंबी, पतली सूंड डालकर उसका रस चूस रही थी। कह रही हो क्या इस मधु पर हमारा अधिकार नहीं है? क्या केवल शकरखोरे का ही है? और मधू पीकर जब मस्त हो जाती तो फिर उनकी हवा में ही पकड़ा-पाटी बड़ी लुभावनी लग रही थी। बीच-बीच में एक काली बड़ी तितली भी आ जाती ।

अरे, यह तो फूलों की घाटी सा दृश्य उपस्थित कर रही है। बाकी फूलों पर इतनी तितलियां और शकर खोरे नहीं आते हैं। वाह! मुकेश, तूने तो खुद की मेहनत से कितना सुंदर दृश्य उपस्थित कर दिया है। इस पेड़ ने सिर्फ तेरे ही नहीं सब रिश्तेदारों के मन में एक अद्भुत खुशी भर दी है। पूरी कॉलोनी में तेरा पेड़ काबिले तारीफ है आज से हम तुझे 'वृक्षप्रेमी' की उपाधि से नावाजते हैं । इन बच्चों को देखने आए घर के बुजुर्गों ने भी तालियां बजाकर उसे अनुमती दी।

''जीओ वृक्षप्रेमी'' सब एक साथ चिल्लाए। और रक्षा बंधन के कार्यक्रम में वह सुंदर वृक्ष भी शामिल हो गया।

●इन्दौर (म.प्र.)

3, 71, 438
प्रसारण संख्या का विश्व कीर्तिमान रचने वाली भारत की एकमात्र बाल पत्रिका

सर्वाधिक प्रसारित हिन्दी बाल मासिक
देवपुत्र